चीन का बंदर वर्ष और बच्चे

आजकल चीन में बंदर वर्ष चल रहा है। वहां के लोगों का मानना है कि बंदर वर्ष में पैदा होने वाले बच्चे अधिक सुंदर और प्रतिभाशाली (Cute and intelligent) होते हैं। इसलिए उनमें और अधिक बच्चे पैदा करने का उत्साह जागा है और उम्मीद की जा रही है कि एक अस्पताल में जहां प्रति वर्ष पांच हज़ार बच्चे होते थे, इस बंदर वर्ष में बच्चे दुगनी संख्या में पैदा होंगे। चीन में कुछ वर्षों से 'एक दम्पत्ति, एक बच्चा' की नीति अपनायी जा रही थी, लेकिन इस वर्ष वे इस नीति को दरकिनार करके 'बेबी बूम' बच्चों की फसल बढ़ाने के लिए कटिबद्ध हैं।

शुक्र है भारत में ऐसी कोई बंदर वर्ष के साथ जुड़ी मान्यता नहीं है, क्योंकि यहां तो सदैव बंदर वर्ष जैसी उपज होती रहती है। भारत में सब कुछ सनातन और शाश्वत है—वानर-सेना निरंतर विकासमान है—प्रशस्त पुण्य-पथ है, बढ़े चलो, बढ़े चलो!

अब तो यहां कोई जनसंख्या-नियंत्रण की बात ही नहीं करता—बढ़ने दो आबादी। बच्चे तो परमात्मा की देन हैं और परमात्मा की भेंट को कैसे कोई नकार सकता है!

दूसरी बात, बच्चे पैदा करना भारत में व्यक्ति की निजी स्वतंत्रता भी समझी जाता है, उस पर अंकुश लगाना उसके मूलभूत अधिकारों पर, उसकी धार्मिक स्वतंत्रता पर कुठाराघात माना जाता है। उन्हें निरंतर बच्चे पैदा किए जाने का धार्मिक संकल्प पकड़े हुए है चाहे वे योग्य हों न हों—सभी अपने को योग्य ही मानते हैं।

ओशो इस धारणा पर चोट करते हुए कहते हैं : व्यक्तिगत स्वतंत्रता का क्या अर्थ होता है? तुम्हें हक है कि तुम किसी भी तरह का बच्चा पैदा करो? उस बच्चे के संबंध में क्या? तुम कौन हो उस बच्चे का भविष्य बिगाड़ने वाले? अगर वह बुद्धू होगा, तो तुम जिम्मेवार हो। अगर वह अपाहिज होगा, तो तुम जिम्मेवार हो। अगर अंधा होगा, तो तुम जिम्मेवार हो। अगर वह बुद्धिहीन होगा, तो कौन जिम्मेवार है? अगर वह जीवन भर परेशान होगा, तो कौन जिम्मेवार है?

'हमें ये सब धारणाएं बदलनी पड़ेंगी। यह व्यक्तिगत स्वतंत्रण की बात मूढ़तापूर्ण है। यही तो इस मुल्क में हमारे प्राण लिए ले रही है। बुद्ध के जमाने में दो करोड़ आबादी थी इस देश की; अब इस देश की आबादी एक अरब से ऊपर हो गयी है। तुम अगर दीन हो, दरिद्र हो, तो कौन जिम्मेवार है? और फिर तुम कहते हो व्यक्तिगत स्वतंत्रता! तो तुम्हें दरिद्र होने की व्यक्तिगत स्वतंत्रता है। तो तुम्हें भूखे मरने की व्यक्तिगत स्वतंत्रता है। फिर शोरगुल क्यों मचाते हो? फिर क्यों चिल्लाते हो कि हम भूखे हैं, कि हम दीन हैं, कि हम दरिद्र हैं, कि दुनिया हमारी फिक्र करे! बच्चे तुम पैदा करो और फिक्र दुनिया तुम्हारी करे? सारी दुनिया पर नाराज हो। और नाराजगी का कारण? जिम्मेवारी तुम्हारी है। कोई और कारण नहीं है।'

ओशो हमें चेताते हैं : 'यह सब अब आगे नहीं चल सकता। हमें व्यक्तिगत स्वतंत्रता की धारणा बदलनी होगी। व्यक्ति ही कहां हैं? जिनमें बोध हो उनको व्यक्ति कहो। इन मशीनों को व्यक्ति कहते हो? जिनको कुछ बोध नहीं है—क्यों बच्चे पैदा कर रहे हैं? किसलिए कर रहे हैं? क्या जरूरत है? जरूरत है भी या नहीं? क्यों पृथ्वी पर बोझ बढ़ा रहे हैं? ऐसे ही भीड़-भाड़ बहुत है, अब कृपा करो! मगर वे कहते हैं कि नहीं, व्यक्तिगत स्वतंत्रता पर बाधा हो जाती है।'

— ओशो

प्रीतम छबि नैनन बसी